

पद्म विभूषण अवॉर्ड डॉ आरए मशेलकर जेकेएलयू लॉरिएट अवॉर्ड से सम्मानित

बिजनेस रेमेडीज/जयपुर

आपका भाग्य आपके हाथ में है। वेस्ट प्रैक्टिस के बजाए नेक्स्ट प्रैक्टिस पर फोकस हो तो परिणाम ज्यादा इमोवेटिव होंगे। कुछ ऐसे ही प्रेस्क उद्घोष के साथ पद्म विभूषण, पद्म भूषण और पद्मश्री से सम्मानित विश्व के ख्यातनाम वैज्ञानिक डॉ. आरए मशेलकर शुक्रवार को जेके लक्ष्मीपत यूनिवर्सिटी में देशभर से आए स्टूडेंट्स, प्रोफेसर्स, वैज्ञानिक एवम बिजनेस पर्सन्स से रुबरू हुए। उन्हे यूनिवर्सिटी की ओर से प्रतिष्ठित जेकेएलयू लॉरिएट अवॉर्ड से नवाजा गया।

जेके समूह के संस्थापक हरि शंकर सिंघानिया की स्मृति में राष्ट्रीय स्तर पर बेहतर योगदान के लिए ख्यातनाम हस्तियों को इस



पुरस्कार से सम्मानित किया जाता है। जेकेएलयू लॉरिएट अवॉर्ड का यह आठवां एडिशन था, इस अवॉर्ड से पूर्व प्रधानमंत्री डॉ. मनमोहन सिंह, पूर्व राष्ट्रपति डॉ. प्रणव मुखर्जी समेत अन्य नामचीन हस्तियों को सम्मानित किया जा चुका है। इस अवसर पर यूनिवर्सिटी के प्रो चांसलर

एचपी सिंघानिया, जेकेएलयू के वाइस चांसलर प्रो. धीरज खोवी, प्रो वीसी आशीष गुप्ता ने यह पुरस्कार प्रदान किया। मशेलकर ने संबोधित करते हुए कहा कि वेस्ट प्रैक्टिस में हम किसी को फॉलो करते हैं, जबकि नेक्स्ट प्रैक्टिस में हम खुद मार्ग तय करते हैं, जो कि स्थाई सफलता

का मार्ग प्रशस्त करता है।

इनोवेशन- जीवन जीने का तरीका : क्रिएटिंग द एक्सपोजेनैशियल ऑनप्रेन्योर्स विषय पर संबोधित करते हुए मशेलकर ने कहा कि इनोवेशन जीवन जीने का एक तरीका है। आर्द्धिनरी व्यक्ति को एक्स्ट्रा आर्द्धिनरी में बदलने की कला सीखने की जरूरत बताई। हाई टेक्नोलॉजी को निचले तबके तक पहुंचाने की क्षमता विकसित करने की बात कही। उन्होंने पत्रकारों से बात करते हुए पेटेंट की जागरूकता लाए जाने की बात पर जोर दिया। उन्होंने इसके लिए हल्दी एवं चासमती के पैटर्न के उदाहरण भी दिए। भूतपूर्व राष्ट्रपति डॉ एपीजे अब्दुल कलाम के साथ उन्होंने बिताए गए अपने कई अनुभवों को साझा किया।

नवाचारों में अग्रणी : डॉ.

आरए मशेलकर का अपने वैज्ञानिक प्रयोगों के लिए पूरी दुनिया में एक विशिष्ट स्थान है। वे ऑक्सफोर्ड समेत कई विश्वप्रसिद्ध यूनिवर्सिटी में प्रोफेसर रह चुके हैं। देश के प्रतिष्ठित वैज्ञानिक और औद्योगिक अनुसंधान परिषद (सीएसआईआर) के महानिदेशक पद पर रहते हुए मशेलकर के नेतृत्व में, सीएसआईआर ने हल्दी के घाव भरने वाले गुणों पर अमेरिकी पेटेंट के निरसन को लड़ाई सफलतापूर्वक लड़ी। उन्होंने यह दावा किया कि यह भारत का पारंपरिक ज्ञान था और इसलिए यह उपन्यास नहीं था। कार्यक्रम के संयोजक यूनिवर्सिटी रजिस्ट्रार केके माहेश्वरी ने कार्यक्रम के सफल संचालन के लिए सभी का आभार जताया।